

पद १६१

(राग: जोगिया - ताल: त्रिताल)

हात जोर बिनती यही करहुं सब जिवनको भाई। जीव तुम नहीं
ब्रह्मरूप सांई ॥ध्रु.॥ चिदाकास आतमकी संगति पंचतत्त्व बन
आई। तेज सो रूप रूप दरसाई। मान वृत्ति इन्द्रिय द्वारे ये भोगनको
ललचाई। चौज्याशी लख योनि फिरवाई। कामिनी धनसुत महाल
मंदिर देख जगत चतराई। अविद्या आतम सुख विसराई। अलख
निरंजन गुरु का डंका सुनले देत दुहाई। जीव तुम नहीं ब्रह्मरूप

सांई ॥१॥ पंचभूत ब्रह्मांड पिंड अरु माया मोह बढाई। ब्रह्म तुम
दृश्य की मौज मचाई। जूं सपनामों राजभोग अरु संपत झूठ लुटाई।
कौन मृगजलसो प्यास बुझाई। निरंकार शिव शक्ति एक अवधूत
सकल जग मायी। नामरूप ब्रह्मबिना कछु नहीं तुमहिं जीव ईश
परमात्मा महिमा बरनी न जाई। कहो कब निशिनें सूरज छाई।
ज्ञानरूपमार्तांड गुरु सत् बेदबानी समझाई। जीव तुम नहीं ब्रह्मरूप
सांई ॥२॥